विश्वविद्यालय और जन हित

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

दी हिंदू में 3 सितंबर 2012 के अपने आलेख 'प्रोफेसर, टीच दाइसेल्फ' (प्रोफेसर, स्वयं को पढ़ाओ) में न्यायमूर्ति मार्कन्डेय काटजू ने शिकायत की है कि हमारी उच्च शिक्षा प्रणाली आम लोगों की सेवा नहीं करती और भारत में उच्च शिक्षा पर खर्च की जा रही भारी-भरकम राशि देश के गरीबों का जीवन स्तर बेहतर नहीं बना रही है।

उनकी बातों पर बहस की आवश्यकता है क्योंकि इनमें यह मुद्दा उभरता है कि उच्च शिक्षा और विश्वविद्यालयों का मकसद क्या है, समाज में उनकी भूमिका क्या है और क्या उन पर खर्च की गई धनराशि का दुरुपयोग हो रहा है; और यह सवाल भी उठता है कि 'जीवन स्तर' शब्द से आशय क्या है।

बाइबल कहती है कि मनुष्य सिर्फ रोटी पर नहीं जीता। भृतहरि ने लिखा था कि साहित्य कला विहीन मनुष्य रूपेण मृगः चरेंती (और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ग्रामीण गरीब संस्कृति की दृष्टि से बहुत समृद्ध हैं)।

मानव शास्त्र हमें *होमो सेपिएन्स* के रूप में पहचानता हैः सोचना, विचार और विश्लेषण मानवीय गुण हैं। विश्वविद्यालय और अन्य उच्च शिक्षा संस्थान इसी के लिए हैं। ये शिक्षा के मंदिर हैं और विचारों, संवाद, विश्लेषण, अनुसंधान और अंतर्क्रियाओं के कारखाने भी हैं।

विचार से कर्म पैदा होता है, कर्म से परिणाम मिलते हैं और जब ये परिणाम सार्वजनिक दायरे में पहुंचते हैं, तो इनका उपयोग नीतिकार और समाज जनहित में कर सकते हैं। विश्वविद्यालयों का काम वैचारिक नेतृत्व पैदा करना और संस्कृति को बढ़ावा देना है। सही है, मगर क्या वे आम लोगों का जीवन स्तर बेहतर बनाने में मदद करते हैं? उच्च शिक्षा विचारों के ज़रिए अनुसंधान व विकास को बढ़ावा देती है और वह मानव शक्ति पैदा करती है जो अनुसंधान व विकास के इन प्रयासों को साकार कर सके। कुछ उदाहरण देखते हैं।

सूचना तकनीकीः दस वर्ष पूर्व एमआईटी के प्रोफेसर केनेथ केनिस्टन ने बैंगलुरु के राष्ट्रीय अग्रणी अध्ययन संस्थान में एम.एन. श्रीनिवास स्मृति व्याख्यान दिया था। उनका व्याख्यान 'आम इंसान के लिए सूचना तकनीकीः भारत से सबक' विषय पर था। उन्होंने दर्शाया था कि कैसे भारतीय वैज्ञानिकों ने सूचना तकनीकी का उपयोग आम नागरिकों, खास तौर से कमज़ोर तबकों की मदद के लिए किया है ताकि वे अपनी बुनियादी ज़रूरतें पूरी कर सकें और अपने बुनियादी अधिकार हासिल कर सकें।

इनके लिए तकनीकी ज़रूरतें होती हैं; जैसे कनेक्टिविटी, कंप्यूटर्स और सॉफ्टवेयर। भारतीय वैज्ञानिकों ने इन्हीं तीन चीज़ों पर सफलतापूर्वक काम किया है। मसलन आईआईटी मद्रास के अशोक झुनझुनवाला ने लूप कनेक्टिविटी तकनीक का अविष्कार किया है ताकि आखिरी व्यक्ति तक पहुंचा जा सके। यह तकनीक ऐसी है कि गांवों को भी सूचना तंत्र में जोड़ा जा सकता है।

कंप्यूटर की बात करें, तो विजय चंद्रू और उनके साथियों ने सिम्प्यूटर का निर्माण किया है जिसमें कई भारतीय भाषाओं में आवाज़ के साथ काम करने की क्षमता है। आकाश टेबलेट इसी सिम्प्यूटर का छोटा रूप है। सॉफ्टवेयर के संदर्भ में केनिस्टन ने भारत में दर्ज़नों भाषाओं व लिपियों की वजह से उत्पन्न कठिन समस्याओं का ज़िक्र करते हुए बताया कि कैसे ट्रिपल आईटी हैदराबाद के राजीव संगल और उनके साथी इस समस्या से जूझ रहे हैं।

सूचना तकनीकी भारत के गरीब, भूखे लोगों की मदद कैसे कर सकती है? एक उदाहरण तो नंदन निलेकणी का आधार कार्ड है जो युनीक आइडेंटीफिकेशन नंबर पर आधारित है। इससे सरकारी योजनाओं - स्वास्थ्य सेवा, राशन वगैरह - के लाभ मिलने में मदद मिलती है और दलालों की भूमिका को खत्म करने में भी मदद मिल सकती है। यह विचार मूल रूप से भारतीय है।

जीव विज्ञान और जिनेटिक्स: डॉ. एम.एन. श्रीनिवास ने *इकॉनॉमिक एंड पोलिटिकल वीकली* (फरवरी 2003) के अपने आलेख 'एन ऑबिच्यूरी ऑन कास्ट एज़ ए सिस्टम' (जाति प्रथा का शोक संदेश) में लिखा था कि जाति प्रथा वास्तव में मर रही है, मगर बगैर हिंसा और खूनी संघर्ष के नहीं मरेगी। और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोमेडिकल जिनेटिक्स, सेंटर फॉर सेल्यूलर एंड मॉलीक्यूलर बायोलॉजी, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय व अन्य संस्थाओं द्वारा देश भर के सैकड़ों लोगों के डीएनए विश्लेषण ने जाति और आस्था के विचारों पर पूर्ण विराम लगा दिया है और दर्शाया है कि हम सब एक जैसे हैं। इस शोध कार्य ने बताया है कि हम कौन हैं, कहां से आए हैं, हमने इस उपमहाद्वीप पर बस्तियां कैसे बनाईं और कैसे विवाह सम्बंध बनाए। भारत की एकता के संदर्भ में इससे बड़ा योगदान क्या होगा? जो अंतर दिखते हैं वे जिनेटिक नहीं, सांस्कृतिक और पारंपरिक हैं।

भोजन और स्वास्थ्य: भारत में जिनेटिक्स और जीव विज्ञान आम लोगों के लिए कहीं दूर तक गए हैं। यह बात शायद कई लोगों के लिए अनजानी और आश्चर्यजनक हो कि भारत दुनिया में बच्चों के 45 प्रतिशत टीकों का उत्पादन करता है और विभिन्न देशों को सप्लाई करता है, और वह भी अत्यंत कम कीमतों पर। इसी प्रकार से मलेरिया और टीबी का गहन अध्ययन किया जाता है, जबकि इन बीमारियों में पश्चिमी देशों की कंपनियों की कोई रुचि नहीं है।

और भारत के पोषण विशेषज्ञों को अनदेखा करना उचित न होगा। इन्हीं पोषणविदों ने देश को घेंघा रोग (आयोडीन नमक के ज़रिए), रतौंधी (विटामिन ए की खुराक के ज़रिए), बचपन के अतिसार (ओआरएस में ज़िंक जोड़कर) और एनीमिया (नमक को समृद्ध बनाकर) से लड़ने में मदद की है।

इसी प्रकार से जिनेटिक्स की मदद से भारतीय कृषि वैज्ञानिकों ने चावल की अधिक उपज वाली किस्में तैयार की हैं। मार्कर असिस्टेड संकरण के ज़रिए तैयार की गई ये किस्में आज 50 लाख हैक्टर क्षेत्र में उगाई जाती हैं। और इमरान सिद्दिकी ने वह जीन खोज निकाला है जो पौधों में कई पीढ़ियों तक संकर ओज बरकरार रखने में मददगार है।

मानविकी और समाज विज्ञान: कहां हैं आज के एम.एन. श्रीनिवास, ए.एल. बाशम, नीलकांत शास्त्री, मिर्ज़ा गालिब, टैगोर, भारती, भातखंडे, यू.वी.स्वामिनाथ या कृष्णमूर्ती? ऐसे रत्न तो विश्वविद्यालयों में ही तराशे जा सकते हैं।

और अंत में पूरी बात को एक परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए यह देखें कि भारत अपनी सारी शिक्षा, अनुसंधान और टेक्नॉलॉजी पर कितना खर्च करता है। यह राशि उस राशि से कम है जो यूएस नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ अपने अनुसंधान व विकास कार्यों पर खर्च करता है। हमारे विश्वविद्यालयों को पैसा और समय चाहिए, रुकावटें और बाधाएं नहीं।

यह भी याद रखने की ज़रूरत है कि शिक्षा, विज्ञान, भाषा या कानून जैसे किसी भी क्षेत्र में गुणवत्ता का फैलाव एक उल्टी घंटीनुमा ग्राफ होता है। हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि यह ग्राफ अधिक गुणवत्ता की ओर बढ़े। इसके लिए धैर्य व समर्थन की ज़रूरत होती है। ***(स्रोत फीचर्स)***

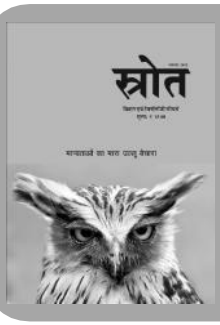

वार्षिक सदस्यता

व्यक्तिगत 150 रुपए
संस्थागत 300 रुपए

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से
ई-10,शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016
के पते पर भेजें।